

पद २५८

(राग: मल्हार - ताल: त्रिवट)

आज नखपर परबत शाम धरे ॥ध्रु.॥ घुमड घुमडकर बादल छाये ।
सननन परबत पर बूंद गिरे ॥१॥ घडि घडि पल पल बिजली
चमके । बादल से अंधियार गिरे ॥२॥ मानिक के प्रभु नाथ
कृष्णजी । आज दुष्टनको संहार करे ॥३॥